# तृप्ति पाण्डे : परिचय

Duration : 04.15 Transcribed words : **628**

- संगीत -

00.08 तृप्ति पाण्डे : मेरा नाम तृप्ति पाण्डे है... और मैं क्या कहूँ, कि बहुत सारे काम करती हूँ... पर वो जितने भी काम हैं, वो सारे काम संस्कृति और कला से जुडे हुये हैं... और पर्यटन मेरा व्यवसाय रहा है और मैं उससे बहुत जुड़ी हुई हूँ... और खास तौर से सांस्कृतिक पर्यटन...

00.32 (सपेरा एक पेड़ के नीचे बैठा बीन बजा रहा है)

00.36 तृप्ति पाण्डे : मैंने रेगिस्तान में बहुत काम किया है... और उस समय काम किया है जबकि हम कलाकारों के साथ काम करते थे... तो हमें, एक ऐसा लगेगा पूरे एक इतिहास की चर्चा कर रही हूँ... क्योंकि उसमें हम जब थे तो वहाँ पर किसी के पास फोन नहीं था... हम लोग अपने फोन को बुक करते... पहले, आपको याद होगा कि अपन के पास, किसी के पास, आजकल तो सब कलाकारों के पास मोबाईल है... और फिर हम वहाँ पर, वहाँ के पुलिस थाने में कहलाते कि उस गाँव से, उस ढाणी से, ढाणी आप समझते हैं ना, जहाँ छोटी छोटी झोंपडियाँ होती हैं... वहाँ से उस कलाकार को बुलाके लाना और तुम्हारे यहाँ बैठाना... तब हम अपने ऑपरेटर से कहेंगे कि हमारा फोन लगाना... तो मेरे लिये वो क्षण बहुत बड़ा था जब मैंने उन कलाकारों के साथ मरूस्थल में, रेगिस्तान का मेला, डेजर्ट फेस्टिवल किया...

01.34 राजस्थानी कलाकार गाना गा रहे हैं....

01.47 तृप्ति पाण्डे : और दूसरा क्षण ये कि जब मैंने, जब मेरी किताब का एक टाईटल है, अंग्रेजी में है क्योंकि, कुछ चीजें आपको अंग्रेजी में इसलिये करनी पड़ती हैं कि आप चाहते हैं कि आपकी परम्परा और उसकी चर्चा आप लोगों तक पहुँचायें... तो उसका जो टाईटल है, वो है व्हेयर साइलेंस सिंग्स (Where Silence sings) .... तो जहाँ, समझिये कि जहाँ सन्नाटा गुनगुनाता हो, यदि मैं उसका अनुवाद करूँ तो... तो वो मैंने महसूस किया था... कि हम घंटों चलते थे, सडकें छोटी छोटी, और समझिये कि

कई कई दफ़ा कोई नजर नहीं आता... कहीं एक ऊँट दिख गया, कहीं एक बकरी का झुंड दिख गया तो कहीं एक फेटे वाला आदमी बेचारा जा रहा है अकेल... तो वो दृश्य जो हैं वो, आज भी यदि मैं आंखें बंद कर लूँ तो मेरे लिये वही सच्चा जीवन का दृश्य था और जिसे आज के लोग फिल्मों में लाने के लिये स्टेज करेंगे, वो भगवान का भेजा हुआ दृश्य था...

02.45 राजस्थानी कलाकार नाच रही हैं...

02.44 तृप्ति पाण्डे : दूसरा जब मैं कालबेलियों के साथ काम किया, वो बहुत बड़ी घटना है... कालबेलिया... ये क्योंकि सपेरा जाति है... पहले लोग सब जानते थे कि भारत जो है सँपेरों का देश है... इट मेक्स चार्मर्स... क्योंकि वो उनको हमेशा सँपेरे ऐसे मिल जाते थे... पर कालबेलिया, उनका ये था कि जब आप, वो काल जो सर्प दंश से उनका जो काल आ जाता है, जो जीवन अंत आ जाता है, उस काल को पकड लें, क्योंकि वो लोग ही ऐसे थे जो जहर निकाल सकते थे...

03.20 राजस्थानी कलाकार नाच रही हैं...

03.23 तृप्ति पाण्डे : मैं लिखती भी हूँ और मैंने कुछ किताबें भी की हैं... और, बस ये समझ लीजिये कि एक ये निरन्तर यात्रा है जिसमें, होता है ना, चौराहे पर खडा मन कहीं भी जाता है... ये कविता मेरे दिल के बहुत करीब है... ऐसे कुछ ज़्यादा नहीं लिखती हूँ पर कभी कभी कलम यकायक चल पडती है...

03.46 तृप्ति पाण्डे :

युद्ध के मैदान में एक परिचित आकृति का निर्माण करते थक गई हूँ मैं
युद्ध के मैदान में एक परिचित आकृति का निर्माण करते थक गई हूँ मैं
कितना अबोध है मन, उसे विश्वासों के लिये आधार चाहिये ।
फूलों को सुगंध का, राहों को यात्री का, जीवन को स्पंदन का
और किसे नहीं, मृत्यु को भी तो शव का प्रमाण चाहिये ।।